

पाचकाग्नि व आमविष

मनुष्य द्वारा सेवन किये गए आहार को शरीर के लिए उपयोगी बनाने में पाचकाग्नि (आहार पाचन प्रक्रिया) की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। मनुष्य की आयु, स्वास्थ्य, सौन्दर्य, बल, उत्साह, प्रभा आदि सम्यक पाचन पर ही निर्भर करते हैं।

अत्यधिक भोजन, असमय भोजन, विरुद्ध आहार सेवन आदि से पाचकाग्नि की विकृति होती है, जिससे अग्निमान्द्य, अपचन, गठिया, अर्श (बवासीर) आदि रोग उत्पन्न होते हैं।

आहार के ठीक तरह से न पचने पर शरीर में विषैले तत्व की उत्पत्ति होती है जिसे आमविष कहते हैं। यह आमविष शरीर के विभिन्न स्थानों का आश्रय लेकर संधियों में पीड़ा, सिरदर्द, त्वचा विकार, पाचन संस्थान संबन्धित विकार एवं चयापचयजन्य विकार (मेटाबोलिक डिसोर्डर्स) इत्यादि को उत्पन्न करता है।